महादेवी वर्मा / कविता..

मै हैरान हूं यह सोचकर
किसी महिला ने उंगली नहीं उठाई,
तुलसीदास पर जिसने कहा-
"ढोल,गवार, शूद्र, पशु, नारी
सब हैं ताड़न के अधिकारी।"

मै हैरान हूं यह सोचकर
किसी औरत ने नहीं
जलाई मनुस्मृति
जिसने पहनाई
उन्हें गुलामी की बेड़यिां।

मै हैरान हूं,यह सोचकर
किसी औरत ने धिक्कारा नहीं
उस "राम" को
जिसने गर्भवती पत्नी को
अग्नि परीक्षा के बाद भी
निकाल दिया घर से बाहर
धक्के मारकर

मै हैरान हूं यह सोचकर
किसी औरत ने
नहीं किया नंगा, उस कृष्ण को
चुराता था जो नहाती हुई
बालाओं के वस्त्र
योगेश्वर कहलाकर भी
जो मनाता था रंगरलियां
सरे आम!

किसी औरत ने लानत नहीं भेजी
उन सबको, जिन्होंने
औरत को समझकर "वस्तु"
लगा दिया, जुए के दाव पर
होता रहा जहां "नपुंसक"
योद्धाओं के बीच
समूची औरत जात का चीर-हरन!

में हैरान हूं ये सोचकर
किसी महिला ने नहीं किया
संयोगिता-अंबालिका के
अपहरण का विरोध
आज तक!

और मै हैरान ही ये सोचकर,
क्यों इतना होने के बाद भी,
उन्हें अपना श्रद्धेय मानकर
पूजती है मेरी मां,बहन, बेटियां
उन्हें देवता भगवान मानकर
आखिर क्यों ?

मै हैरान हूं
उनकी चुप्पी देखकर
इसे उनकी सहनशीलता कहूं या
अंध श्रद्धा या फिर मानसिक गुलामी की पराकाष्ठा!

व्यंग्य मोदी, जैसा भी है, है तो हिंदुओं का हितैषी ही

माना सीमा पर सैनिकों की शहादत बढ़ती जा रही है, पर उसमे मोदी क्या करे? सेना तो होती ही मरने के लिए है, खुद भाजपाइयों का कहना है। हमें क्या, मोदी जैसा भी है, है तो हिंदुओं का हितैषी ही।

माना देश की व्यवस्था अब चंद पूंजीपतियों के नियंत्रण में आती जा रही है, पर वो पूंजीपति भी तो हिन्दू हैं, बस, यही साबित करता है कि मोदी ही हिंदुओं का हितैषी है।

माना कि संसद में कानून लाकर सुप्रीम कोर्ट के आदेश बिना भी राममंदिर निर्माण कराने का विकल्प है, सरकार ऐसा नही कर रही उसकी नालायकी है, तो भी क्या? मोदी जैसा भी है, है तो हिंदुओं का हितैषी ही।

माना इन्होंने भगवान राम हनुमान माता जानकी का अपमान करने वाले नरेश अग्रवाल को भाजपा में ले लिया, तो भी क्या फर्क पड़ना है, मोदी है ना? हिंदुओं का हितैषी है।

माना कुछ मक्कार पूंजीपति देश का पैसा विदेश में निवेश करके फरार होते जा रहे हैं, पर उसमे भी तो हिंदुओं का हित ही है, बता दो एक भी मुसलमान पूंजीपति अगर पैसा लेकर भागा हो तो, साबित हुआ ना कि मोदी जैसा भी है, है तो हिंदुओं का हितैषी ही।

अच्छा नोटबन्दी कर दी, और ये भी साबित होने लगा कि उसका उद्देश्य ही गलत था, हिंदुओं को भी अपने पैसे के लिए बैंकों के बाहर फ़ज़ीहत करवानी पड़ी, तो क्या? अपना मोदी है तो हिंदुओं का हितैषी ही।

ओहहो, फिर काम धंधे का रोना, अरे बावले काम धंधा आज नही है तो कल चलेगा, ना कहीं का अडानी अम्बानी था तू पहले भी, और तेरा लखटकिया बिजनिस क्या हिंदुत्व से बड़ा हो गया। अब तो मान जा कि मोदी जैसा भी है, है तो हिंदुओं का हितैषी ही।

माना कुछ मक्कार पूंजीपति देश का पैसा विदेश में निवेश करके फरार होते जा रहे हैं, पर उसमे भी तो हिंदुओं का हित ही है, बता दो एक भी मुसलमान पूंजीपति अगर पैसा लेकर भागा हो तो, साबित हुआ ना कि मोदी जैसा भी है, है तो हिंदुओं का हितैषी ही। अच्छा नोटबन्दी कर दी, और ये भी साबित होने लगा कि उसका उद्देश्य ही गलत था, हिंदुओं को भी अपने पैसे के लिए बैंकों के बाहर फ़ज़ीहत करवानी पड़ी, तो क्या? अपना मोदी है तो हिंदुओं का हितैषी ही।

फिर झंडूपना, अबै खायेगा क्या स्कूल अस्पताल को? ना कहीं का बैरिस्टर बनना तेरी औलाद को, ना कहीं तुझे गुर्दे बदलवाने अस्पतालों में। नही बने स्कूल अस्पताल तो नही बने, मोदी को कुछ ना कह दियो, हिंदुओं का हितैषी वही है।

अर्थव्यवस्था, अच्छा, अब तू बताएगा अर्थव्यवस्था कैसी चल रही है, वो जो सिविल का वकील वित्तमंत्री है, वो क्या नारियल फोड़कर निकला है? तेरे से ज़्यादा जानता है वो। अबे छोड़ विदेशी आंकड़ों को, मोदी के मंत्री जो कहें वही सच है, क्योंकि हिंदुओं का असली हितैषी ही मोदी है।

भुखमरी के पायदान पर भी कई देशों से पिछड़ गया, बै लल्लू इसे ऐसे समझ, भुखमरी में पिछड़ा है, आगे तो नही बढ़ा। आई समझ में बात? ये मोदी ही हिंदुओं का असली हितैषी है।

क्या राफेल राफेल, अबे हिन्दू हृदय सम्राट ने एक गरीब हिन्दू को कमीशन क्या दिलवा दिया स्साले तुम्हे ही आग लगने लगी? यही तो कमी है हिंदुओं की, दूसरे हिन्दू को आगे बढ़ता नही देख सकते। इसी लिए कहता हूँ मोदी ही हिंदुओं का भला कर सकता है।

अबै छोड़ ना टैक्स पैक्स, जनता है ही टैक्स देने के लिए, कौनसा तेरी जेब काटकर निकाला है।

डीजल पेट्रोल महंगा है, तो भाई मुग़लों के बाद पहली बार हिंदुओं की सरकार आई है, और तू दो कौड़ी का आदमी इनके खर्चे पर सवाल उठाता है? मुग़लों के वक्त तो तुम्हारी ज़ुबान नही हिलती थी। हिंदुओं के शासन में इतना बेचैन हो गया तू? मत भूल, मोदी जैसा भी है, है तो हिंदुओं का हितैषी ही। विदेश नीति फेल हो रही है तो क्या? पास फेल चलता रहता है, पर मोदी जैसा भी है, है तो हिंदुओं का नेता ही।

अखबार रखदे दूर, ज़्यादा ज्ञान ना लेवै, बढ़ते दंगे पंगे, बढ़ती अपराध दर, ये सब बेकार की बातें हैं, असली चीज है हिंदुत्व, और मोदी से ही हिंदुत्व है।

तो भाय, मोदी जैसा भी हो, है तो हिंदुओं का हितैषी ही।

- साइबर नजर

व्यंग्य जो मज़े अलंकार में हैं वह कलाकार में नही हैं...

हफ़ीज़ किदवई

अनुप्रास अलंकार – अनुप्रास शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है – अनु + प्रास 7 यहाँ पर अनु का अर्थ है- बार - बार और प्रास का अर्थ होता है – वर्ण। जब किसी वर्ण की बार – बार आवृत्ति हो तब जो चमत्कार होता है उसे अनुप्रास अलंकार कहते है।

उदाहरण –सीबीआई ने सीबीआई के ऑफिस में सीबीआई अधिकारी पर छापा डाला

लाटानुप्रास अलंकार(अनुप्रास का मंझला बेटा) – जहाँ शब्द और वाक्यों की आवृत्ति हो तथा प्रत्येक जगह पर अर्थ भी वही पर अन्वय करने पर भिन्नता आ जाये वहाँ लाटानुप्रास अलंकार होता है। अथार्त जब एक शब्द या वाक्य खंड की आवृत्ति उसी अर्थ में हो वहाँ लाटानुप्रास अलंकार होता है।

उदाहरण -सीबीआई ने सीबीआई के ऑफिस में सीबीआई ऑफिसर पर छापा डाला

यमक अलंकार – यमक शब्द का अर्थ होता है – दो। जब एक ही शब्द ज्यादा बार प्रयोग हो पर हर बार अर्थ अलग-अलग आये वहाँ पर यमक अलंकार होता है।

उदाहरण -सीबीआई ने सीबीआई के ऑफिस में सीबीआई पर छापा डाला ।

नोट -उपरोक्त उदाहरण दोनों अलंकार में इस्तेमाल हो सकता है पिछले सत्तर सालों में ऐसा कोई उदाहरण सामने नही ला पाया हिंदी जगत जहाँ अनुप्रास और यमक अलंकार साथ हों,थोड़ी मेहनत की जाए तो श्लेष अलंकार भी पलथी मारकर करीब आ सकता है ।खैर यहाँ यमक इसलिए भी है की इसमें तीन जगह सीबीआई का प्रयोग हुआ है और तीनो जगह इसका अर्थ भिन्न भिन्न है । इनमे एक सीबीआई सत्तर सालों की है, एक सीबीआई चमत्कारिक,दिव्य चार वर्षों की है और एक सीबीआई कथित सांस्कृतिक संगठन विशेषज्ञ की भी है,जो पिछड़ा वर्ग को और पिछाड़ देने की महारत रखती है । तीनो का अर्थ अलग - अलग है मगर मूलअर्थ एक ही है "अनर्थ" ।

ऋषिपाल चौहान
चेयरमैन, जीवा पब्लिक स्कूल

बच्चों का सर्वांगीण विकास

राष्ट्र का विकास केवल मात्र किसी एक की जिम्मेदारी नहीं होती है बल्कि सभी नागरिकों का कत्तर्व्य है। सभी को एक जुट होकर राष्ट्र के लिए कार्य करना चाहिए। इस कार्य में कोई भी यह न सोचे कि मेरा कार्य नहीं है। इसी प्रकार राष्ट्र की उन्नति वहाँ की भावी पीढ़ी पर निर्भर करती है। भावी पीढ़ी यानी की बच्चों, उनके सर्वांगीण विकास की ज़िम्मेदारी भी केवल एक विद्यालय की नहीं बल्कि पूरे समाज की है। समाज का प्रत्येक पक्ष इस कार्य के लिए उत्तरदायी होता है। प्राचीनकाल में जब भारत में ग्रामीण सभ्यता का प्रचलन था उस समय गाँव का प्रत्येक बच्चा पूरे गाँव की निगरानी में रहता था और कभी अकेला महसूस नहीं करता था।

कहने का तात्पर्य है कि गाँव के सभी लोग बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए स्वयं को उत्तरदायी मानते थे परन्तु शहरी परम्परा में यह प्रचलन समाप्त हो चुका है। अब सब लोग अपने में सिमट गये हैं। कोई किसी के प्रति उत्तरदायी नहीं है सबके कत्तर्व्य बोध की भावना भी बदल चुकी है। अब अभिभावक अपने बच्चों को महंगे से महंगे स्कूल में दाखिला दिलवा कर सोचते हैं कि अब बच्चों का पूर्ण विकास स्वत: ही हो जाएगा। यह सोचना व्यर्थ है एक बच्चो के विकास के लिए एवं उसकी सुरक्षा के लिए, केवल एक विद्यालय ही ज़िम्मेदार नहीं है बल्कि समाज के सभी स्त्रोत भी उत्तरदायी हैं और सभी मिलकर कार्य करें। यह न सोचें कि यह हमारा बच्चा नहीं है बल्कि यह सोचें की यह राष्ट्र की धरोहर है। इनका विकास हमारा पहला कत्तर्व्य है इसलिए सभी संगठन एकजुट होकर कार्य करें। अध्यापक, अभिभावक और विद्यार्थी में आपस में एक अटूट विश्वास होना आवश्यक है। विश्वास की यह कड़ी ही एक दूसरे को आपस में जोड़ती है। शिक्षा के क्षेत्र से जुड़े सभी लोग अपने कर्त्तव्यों से भलीभांति परिचित हों जैसे सुरक्षा परिवहन कर्मचारी, स्वच्छता और बागवानी कर्मचारी इत्यादि को भी स्वामित्व का प्रशिक्षण देना और उन्हें भी उनके दायित्व बोध से अवगत कराना चाहिए। समाज में यदि सभी अपने दायित्वों से अवगत होंगे तो अवश्य ही यह समाज उच्चकोटि का होगा।